।। ओ३म्।।

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

महर्षि दयानन्द जन्मोत्सव की समस्त देशवासियों को हार्दिक शुभकामनाएँ

वर्ष 36, अंक 17 एक प्रति : 5 रुपये

सोमवार 04 मार्च, 2013 से 10 मार्च, 2013

विक्रमी सम्वत् 2069 दयानन्दाब्द : 188

सृष्टि सम्वत् 1960853113 वार्षिक : 250 रुपये

फैक्स : 23365959 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com

Website:www.thearyasamaj.org पृष्ठ 1 से 8 तक

संस्कृत अकादमी दिल्ली सरकार के तत्वावधान में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के सहयोग से

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के जन्मोत्सव के शुभअवसर पर

दो दिवसीय राष्ट्रीय संस्कृत विद्वत् संगोष्ठी सम्पन्न

संस्कृत के अस्तीत्व की कल्पना महर्षि दयानन्द के योगदान के बिना अधूरी

समाज की समग्र उन्नति की सोच है महर्षि दयानन्द की विचारधारा में

दिल्ली सरकार की संस्कृत अकादमी द्वारा आयोजित दो दिवसीय राष्ट्रीय विद्वत गोष्ठि मे योग्य विद्वानों के शोधप्रद लेख प्रस्तुत

मंच पर उपस्थित महाशय धर्मपाल जी, शिक्षा मन्त्री किरण वालिया जी, ब्र.राजसिंह आर्य जी एवं अन्य अतिथि गणमान्य

दीप प्रज्वलित करते डॉ.रमाकान्त गोस्वामी जी , डॉ.महेश विद्यालंकार एवं डॉ. धर्मेन्द्र कुमार शास्त्री

डॉ. रमाकान्त गोस्वामी परिवहन मंत्री, श्रीमती किरण वालिया शिक्षा मन्त्री, प्रो.शशि प्रभा कुमार, महाशय धर्मपाल जी सहित भारतवर्ष के अनेक विद्वानों ने महर्षि दयानन्द के विचारधारा की उपयोगिता पर दिया जोर

विस्तृत समाचार अगले अंक में.....

स्वामी श्रद्धानन्द गुरुकुल परली-वैजनाथ (महाराष्ट्र) में

महाशय धर्मपाल MDH आर्य वेदव्यास वानप्रस्थाश्रम का उद्घाटन

वैदिक धर्म के प्रचार में वानप्रस्थियों का योगदान प्रेरणास्पद -डॉ.ब्रह्ममुनि

संसार का विशुद्ध ज्ञानस्रोत है "आर्य समाज" - *जयसिंहराव गायकवाड*

उद्घाटन के शुभ अवसर पर सर्वश्री विनय आर्य जी, जयसिंहराव गायकवाड जी, रवि कुमार जी, मनोज गुलाटी जी एवं अन्य आर्यजन

महाशय धर्मपाल एम.डी.एच. आर्य वेद व्यास वानप्रस्थाश्रम का दृश्य

महाराष्ट्र के परली-वैजनाथ (जि. बीड) स्थित स्वामी श्रद्धानन्द गुरुकुल आश्रम में आर्यजगत् के दानवीर भामाशाह तथा एम.डी.एच. उद्योगसमूह के चेयरमैन महाशय धर्मपाल जी द्वारा प्रदत्त 1 6 लाख रुपये की पावन दानराशि से नवनिर्मित भव्य 'महाशय धर्मपाल एम.डी.एच. आर्य

शेष पृष्ठ 3 पर.....

दिल्ली की समस्त आर्यसमाजों एवं आर्य संस्थाओं की ओर से

ऋषि बोधोत्सव एवं विशाल ऋषि मेला

तिथिः रविवार, 10 मार्च, 2013 स्थान : रामलीला मैदान, नई दिल्ली -2

आप सब सपरिवार इष्टमित्रों सहित पधारकर कार्यक्रम की शोभा बढाएँ।

वेद-स्वाध्याय

लम्बी जीभ वाले कुत्ते को भगाओ

- स्वामी देवव्रत सरस्वती

पुरोजिती वो अन्धसः सुताय मादयित्नवे। अप श्वानं श्नथिष्टन सखयो दीर्घजिह्वयम्।। ऋ. 9।101।1

अर्थ– (सखायः) हे मित्रो! (वः) तुम्हारे (सुताय) शरीर के अंग–अंग से उत्पन्न इस (अन्धसः) सोम, वीर्य जो सुरक्षित होने पर (मादयित्नवे) अपूर्व आनन्द और मस्ती देने वाला है, इसके (पुरोजिती) पूर्ण विजय के लिये (दीघ्र जिह्वयम्) लम्बी जीभ वाले (श्वानम्) कुत्ते को (अप श्नथिष्टन) विनष्ट कर दो।

आदि शंकराचार्य द्वारा रचित प्रश्नोत्तरी में एक प्रश्न आया है– **'जगत् जितं केन'** अर्थात् संसार को किसने जीता?

इसका उत्तर है **'मनो हि येन'**– जिसने अपने मन को जीत लिया, सारा संसार उसका वशवर्ती हो जाता है। मन ही मनुष्यों के बन्धन और मोक्ष का कारण है। मन उपलक्षण रूप में सभी इन्द्रियों का प्रतिनिधि है क्योंकि जब तक मन का सहयोग नहीं होता, अकेली इन्द्रियाँ का विषयों ज्ञान प्राप्त नहीं कर सकती। गीता कहती है– **"कर्मेन्द्रियाणि संयम्य य आस्ते मनसाचरन्। इन्द्रियार्थान् विमूढात्मा मिथ्याचारः स उच्चते।।3.6।।"**

जो कर्मेन्द्रियों को बलपूर्वक वश में करके मन से इन्द्रियों के विषयों का स्मरण करता रहता है, ऐसा मनुष्य मिथ्याचारी कहलाता है।

मन्त्र में लम्बी जीभ वाले कुत्ते को मारने या भगाने को कहा है। जब कोई व्यक्ति भोजन करता है और यदि वहाँ कोई कुत्ता आ जाये तो वह जीभ निकाल कर बैठ जाता है और उसके मुख से लार टपकने लगती है। यहाँ कुत्ता लालच का प्रतीक है। मन को यहाँ कुत्ते से उपमा दी है। किसी कवि का वचन है – **मन कामी मन लालची मन पापी मन चोर। मन के मते न चालिये घड़ी–घड़ी मन और।।**

चरक संहिता चिकित्सा (4.46) के अनुसार जैसे दूध में घृत और तिलों में तेल रहता है वैसे ही यह सोम, शुक्र शरीर की सभी धातुओं का सार है। यदि इसकी सुरक्षा की जाये तो फिर यह अद्भुत प्रकार की मस्ती, स्फूर्ति, उत्साह और आनन्द को देता है। इसके निग्रह के लिये सर्व प्रथम जिह्व पर नियन्त्रण रखना आवश्यक है। जिसका अपनी जिह्वा पर नियन्त्रण है वह काम वासना को भी नियन्त्रित रख सकता है। इसलिए ब्रह्मचर्य साधना में सादा भोजन और उपवास का बहुत महत्त्व है। लोक में कहावत है – **कमचोरा और चटोरा ब्रह्मचारी नहीं रह सकता।** यदि गम्भीर होकर इस बात का चिन्तन करें तो सच्चाई प्रतीत होगी। जो माल–मलाई और चटपटी वस्तुओं को खाता है और शारीरिक श्रम नहीं करता उससे संयमी रहने की आशा नहीं की जा सकती।

दीर्घ जिह्वयम् का अर्थ मन करने पर यह बात और अधिक स्पष्ट हो जायेगी। ब्रह्मचर्य का सीधा सम्बन्ध मन से है। यदि मन पर संयम नहीं है तो चित्तायतं नृणां शुक्रम् चित्त के अधीन शुक्र होता है। चित्त में यदि चंचलता या वासना का ज्वार उठ रहा है तो शुक्र भी येन–केन प्रकारेण स्खलित होगा ही इसमें सन्देह

शेष पृष्ठ 3 पर...

महर्षि देव दयानन्द का कृतित्व और व्यक्तित्व : जर्मन साहित्यकार कवयित्री ए. क्रिसेटाइन एलबर्स की दृष्टि में

महर्षि देव दयानन्द के कृतित्व और व्यक्तित्व पर भारत में अनेक चिन्तकों, समाजसेवियों, साहित्यकारों और दार्शनिकों ने लेखनी चलाई है। लेकिन विदेशी विद्वानों और दार्शनिकों ने क्या लिखा और कहा है, बहुत कम लोगों को ज्ञात है। जर्मन साहित्यकार कवयित्री ए. क्रिसेटाइन एलबर्स ने महर्षि के कृतित्व और व्यक्तित्व को भावपूर्ण कविता में ढाला है। ज्ञातव्य है, महर्षि से सन्दर्भित ऐसी कविताएँ अभी तक भारत में नहीं लिखी गई, इससे इन कविताओं का महत्त्व और भी बढ़ जाता है। इसका काव्यानुवाद वेद–विचारक और नवयोग के प्रतिस्थापक डॉ. ज्ञानचन्द्रजी ने इसका काव्य भावानुवाद साहित्यपूर्ण भाषा में किया है। यह श्रद्धात्मक काव्य अत्यन्त श्रद्धा के साथ धारावाहिक रूप में दिया जा रहा है। आर्य महानुभाव इसे बहुत ही श्रद्धा और भक्तिभाव से परिपूर्ण होकर ही पढ़ें। प्रस्तुत धारावाहिक का तेरहवाँ भाग का काव्यानुवाद प्रकाशित किया जा रहा है। महर्षि के **जीवन दर्शन** से सम्बन्धित धारावाहिक के इस भाग को भी पूर्व की भाँति आप सभी भक्तिभाव एवं श्रद्धा के साथ पढ़ेंगे ऐसी आशा है– **अखिलेश आर्येन्दु**

ऋषिवर जिसने युग-पथ पर प्रेम बिखेर दिया आत्मा का मृत्युरहित संन्देश वहन कारी

उसने एकाकीपन न बनाया निजी लक्ष्य
आकाशों में करता न व्यर्थ का अवगाहन
उसका विनम्र पथ था प्रति जन तक जा पाना
उत्तम शिक्षा अरु शुभ आशीष प्रदान हेतु,
जन जन के ही निमित्त निज प्राण त्यागने को।
अरु ऐसी मृत्यु! प्रभाशित तारों अश्रु झरो!
सूर्यों कांपों थरथरित, क्योंकि वह चला गया!
जिसने बिसराया प्रेम वर्ष–पंथों पर यों
मरते क्षण भी हत्यारे को आशीष दिया,
फिर दुख के आंसू क्यों उस महामहिम के हित?
तारकगण क्या न उल्लसित होकर झूम रहे
उसके हित जो कि सदा प्रेम से विभक्त रहा,
अति महत् घृणा, कटुता से जो विचलित न हुआ,
मरणासन पर भी हत्यारे को मुक्त किया?

अब तुमसे दूर न काल चक्र का परिवर्तन
तेरे तारक शंसित पथ ने महत् लक्ष्य पाया,
औदार्यपूर्ण नभ के नीचे, आत्मा की वीणाएं झंकृत,
स्वागत करने को देवदूत अंतरआत्मा का।

हे नभ, ऐसा स्थान न है तेरे समीप,
जिससे हम उसकी प्रेमगिरा फिर सुन पाएं?
हा! उसके मधु संदेश पढ़ो उन नयनों में जो अश्रु भरे,
उसके पद चिह्नों पर विश्वास सहित चलकर
वह परम प्रभु तो सबके ऊपर स्थित है।

हो गया सभी, अब मौन कर रहा है विलाप
तेरे वे कर जिसने कि दुष्टता को ढाला
ले पुरस्कार में खन करती मुद्राएं,
क्या यही नहीं था तेरा पुण्य ध्येय मानव–
सेवा करनी थी तुझे सन्त की अरु ऋषि की–
वह कर्म कि जिसकी विज्ञात्मा लालसा करें–
वह कर्म कि जिसको शास्त्रों ने पवित्र बोला–
नित्य के खाद्य अरु भोजन आदि पकाने का
उन प्रभु–विभूति, उस देवदूत आत्मा के हित
यह तो ऐसा श्रम है, जो देवों तक को प्रिय।

किस नारकीय प्राणी ने तेरे श्रवणों में
विश्वासघात के ऐसे गरल अशब्द फूंके?
मुद्रा, स्वर्णिम मुद्राएं कठिन गरल के हित–
वे हाथ कि जिन हाथों ने गरल घोल डाला
उस कर के लिए अनेक घने सन्ताप, दुःख
उस विषदाता के लिए सहस्रों पीड़ाएं
जिसने जीवन शोषित विनष्ट कर चांदी ली,

वह नर जो देवों तक के लिए सुपावन था।
अरु वह दयनीय, अभागा दुष्ट बुद्धि मानव,
जैसे कि पुरातन कालों में भी हुए बहुत,
देखा उसने जब रक्तपगा निज दुष्ट कृत्य,
हो गया काण्ड पर तब उसको स्मरण हुआ
उसने भीतर भी प्राण विभीषिका अनुभव की
अत्यन्त जुगुप्सापूर्ण भयानकता दुस्तर
यह पापपूर्ण अपराध कि उसने कर डाला,
मानसिक त्रास से पीड़ित हो थर –थर करता,
दुःख, पश्चातापों के प्रभाव से कराहते,
वह गया स्वयं को धिक्कारते करते हुए वहां–

श्री दयानन्द के चरणों पर गिर पड़ा दीन,
निज दुष्ट कृत्य सारा ऋषिवर से कह डाला।
पर दयानन्द ऋषि जो सदैव थे देवोपम
मुस्काए प्रेमसहित अरु क्षमा किया उसको,
वे बोले "हे मम बन्धु भूल से भरे हुए–
सत्वर कानून–विधान खोज लेगा तुमको,
ये धन मुझसे ले लो, अरु दूर चले जाओ,
शीघ्रता करो, भागो, सीमा को पार करो,
अब तनिक न ठिठको तुम, तत्काल चले जाओ।"
फिर स्वयं शांत हो, आत्म–समर्पित हुए ऋषि
निस्तब्ध शांत हो बैठे अंतिम समय जान

मधुर स्वर में पावन मंत्रों का प्रणयन करते
तब उनकी आत्मा महिममय होकर उभरी,
उन मौनायामों में कि जहां प्रज्ञा एवं–
शूचि प्रेम, शांति का राज्य सनातन रहता है,
महदात्माएं हैं वहां सदा मिलती जुलती,
आपस में परामर्श हित महासमितियों में
निर्णय करने को, भाग्य सूर्य–नक्षत्रों का–
नीचे आशीष भेजते, पद–चरणों को करते निर्देशित
उन जीवों के जो भ्रांत तथा जग बीच भटकते इतस्ततः

माया की भ्रष्ट जटिलता में जो घूर रहे
इस तरह स्वयं की ओर गया वापिस वह भी
दे रहा जहां से निर्देशन अरु संरक्षण
उन अपनों को जो हैं तत्पर अनुगमन हेतु,
उस पथ पर जिस पर वह भी स्वयं चला सदैव,
अरु उसके कर्म सुजीवित हैं अरु वर्धमान,
उसके संदेश सदैव भेजते, फैलाते
आगे पृथ्वी के तथा सागरों के ऊपर,

जिस भूमि पवित्र मनुज वह करता था विचरण
उसके पद तल के नीचे की भू भी पवित्र
हैं उसके वचन सत जीवित अरु वर्द्धमान,
अपनी निज प्रज्ञा में एवं निज दृढ़ता में
उस सत्य हेतु जिसको वे संचारित करते
अरु हम जो अब भी अन्धकार में पड़े हुए
अस्थिर इस धराधाम में पथ टटोलते है
उनके सुनाम हित हमको होना एकत्रित
आओ हो जाएं मुक्त महत्तम लक्ष्य ओर,
अनुरक्त प्रेम अरु स्वार्थ रहित सेवाओं में,
उसके पद चिह्नों पर चलने का यत्न करें
निज आत्मा में उसके संदेश सुनें सदैव
संदेश सदा जा जा कर सबको बतलाएं

सदभाव सदा निज आत्मों से भी रखें सभी
भाविष्य पीढ़ियों में होगा परिणाम सतत,
फल–फूल सहित उर्वर होंगे वे सद्प्रयास
सब प्राणि–मात्र को शांति और आशीष मिले– **क्रमशः**

पृष्ठ 1 का शेष

महाशय धर्मपाल(एम.डी.एच)....

वेदव्यास वानप्रस्थाश्रम' भवन का उद्घाटन दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री श्री विनय आर्य जी ने किया।

यह उद्घाटन समारोह गत रविवार 24 फरवरी 2013 को पूर्व केन्द्रीय राज्यमन्त्री जयसिंहराव गायकवाड (पाटील) की अध्यक्षता में उत्साह के साथ सम्पन्न हुआ। प्रातः 10 बजे नूतन वानप्रस्थाश्रम भवन में पं. सुधाकर जी शास्त्री के ब्रह्मत्व में उद्घाटन यज्ञ सम्पन्न हुआ, जिसमें उपरोक्त मान्यवर अतिथिगण यजमान के रुप में सम्मिलित हुए। तत्पश्चात सभा व आर्यसमाज –पदाधिकारियों की उपस्थिति में नामफलक का उद्घाटन किया गया।

बाद में गुरुकुल आश्रम में गुरु विरजानन्द सभागृह के सम्मुख भव्य पंडाल में मुख्य समारोह हुआ। अपने उद्घाटन भाषण में श्री विनय आर्य ने कहा कि – सम्प्रति समग्र संसार शाश्वत सुख व शान्ति की प्रतीक्षा में है। उसे ऐसे विचारों की तलाश है, जो उसके अन्तर्मन में उत्पन्न जिज्ञासाओं का वैज्ञानिक दृष्टिकोण से समाधान कर सकें। तब इसके लिए केवल आर्यसमाज की वैदिक विचारधारा ही एकमात्र पर्याय बन सकती है। यह विचार उसकी भौतिकता के साथ ही आध्यात्मिक पक्ष को भी सबल,सक्षम व परिपूर्ण बना देती है। फलस्वरुप आनेवाली 21 वीं शताब्दी में भारत देश समग्र विश्व में एक महाशक्तिशाली राष्ट्र के रुप में उभर सकता है, जिसका सपना एक समय ऋषिभक्त पं. गुरुदत्त ने देखा था।'

महाशय धर्मपाल जी के निर्देशन में एम.डी.एच. कम्पनी द्वारा देश के विभिन्न स्थानों पर चल रहें जनहितकारी, शैक्षणिक ,सामाजिक ,सेवाभावी प्रकल्पों की जानकारी देते हुए कहा कि – परोपकार के कार्य भारत में जगह–जगह निरंतर होते रहें, यह महाशयजी की प्रबल इच्छा है। ऋषि दयानंद के विचारों के अनुकूल जो भी पवित्र कार्य हो रहा है, उसके सहयोग के लिए महाशय जी सदैव तत्पर रहते है।' श्री आर्य ने महाशय जी की संघर्षमयी प्रेरक जीवन कहानी भी सुनाई तथा दिनचर्या के विषय में जानकारी दी। इस अवसर पर श्रोताओं को चलभाष पर प्रेषित महाशय जी का सन्देश भी सुनाया गया।

प्रमुख अतिथि श्री रविकुमार सचदेवा एवं श्री मनोज गुलाटी ने कहाँ कि, नया वानप्रस्थाश्रम भवन मुनिजनों के लिए आत्मिक उन्नति में सहायक हो, यह अभिलाषा व्यक्त की।

अपने अध्यक्षीय समापन भाषण में पूर्व केन्द्रीय राज्यमन्त्री श्री जयसिंहराव जी गायकवाड (पाटील) ने आर्यसमाज को क्रान्तिकारी ऊर्जास्त्रोत बताया। उन्होंने कहा– देश की पतनावस्था को बचाने के लिए एकमात्र आर्यसमाज ही समर्थ पर्याय है। ईश्वरीय पावन वेदज्ञान के आधार पर यह संस्था समग्र संसार को मानवता का पथ दर्शाती है। इसके प्रचार एवं प्रसार के लिये धन के साथ–साथ समय देना भी अत्यंत आवश्यक है।'

कार्यक्रम के शुभ अवसर पर पू. स्वामी श्रद्धानंद जी (हरिशचन्द्र गुरुजी) के पांच शिष्यों सर्वश्री डॉ.देविदासराव नवलकेले (मुम्बई), डॉ.बी.एम.मेहेत्रे (हैदराबाद), प्रा.डॉ.शेषराव वांजरखेडे (बीदर), शिवराज धरणे (बेंगलोर) एवं राजेश भागवत (पुणे) इन होनहार शिष्यों का अभिन्नदन किया गया। साथ ही वानप्रस्थाश्रम में दीक्षित कपिलमुनि (धर्माबाद), श्रेष्ठमुनि,वशिष्ठमुनि, वेदमुनि तथा श्रीमती मेत्रेयी यति इन मुनियों का, विभिन्न दानदाताओं, सहयोगी एवं कार्यकर्ताओं का सम्मान भी किया गया।

इस अवसर पर कार्यक्रम कें संयोजक डॉ.ब्रह्ममुनि जी ने गुरुकुल आश्रम में चल रहे क्रियाकलापों की जानकारी देते हुए सभी दानदाताओं के प्रति एवं कार्यक्रम की सफलता के लिये अलग–अलग स्थानों से पधारे सभी मुख्य अतिथियों, विद्वानों , कार्यकर्ताओं का एवं महाराष्ट्र प्रान्त के सभी आर्यसमाजों के पदाधिकारियों का तथा सभासदों का धन्यवाद प्रकट किया।

कार्यक्रम में उपस्थित सर्वश्री रवि सचदेवा (एम.डी.एच. हिमाचल प्रबंधक), मनोज गुलाटी (संचालक टूर एण्ड ट्रैवल्स, दिल्ली), आर्य भजनोपदेशक पं. सुरेन्द्रपाल जी आर्य (नागपुर), स्वामी सत्यव्रतानन्दजी सरस्वती (बुरहानपुर, मध्य प्रदेश) आदि प्रमुख अतिथिगण तथा स्वामी श्रद्धानन्दजी, कार्यकारी प्रधान बलिराम जी पाटील, मंत्री राजेन्द्र दिवे, उपप्रधान योगमुनिजी, उपमन्त्री प्रा. देवदत्तजी तुंगार,प्रा.डॉ.प्रकाश कदम, आर्यसमाज के प्रधान रामपाल लोहिया,प्रो. ओमप्रकाश जी होलीकर,स्वन्तत्रा सेनानी, प्रेमचन्द्र जी 'प्रेम' , जुगलकिशोर लोहिया ,सोममुनि,विज्ञानमुनि, आदि महानुभाव उपस्थित थे। समारोह का संचालन आचार्य डॉ.नयन कुमार जी ने किया।

विस्तृत झलकियाँ पृष्ठ 4 पर

पृष्ठ 2 का शेष

लम्बी जीभ वाले कुत्ते को..

नहीं है।

ब्रह्मचर्य रक्षण की यही विधि है कि स्त्रियों का दर्शन, स्पर्शन, एकान्त सेवन, सम्भाषण, विषय कथा, परस्पर क्रीडा, विषयों का मन में चिन्तन और संग इन आठ प्रकार के मैथुनों से दूर रहकर व्यायाम, प्राणायाम, सत्संग, स्वाध्याय विद्याभ्यास और ईश्वर की भक्ति प्रतिदिन नियम से की जाये। मन को हर समय व्यस्त रखा जाये। जैसे दूध में उफान आने पर चूल्हे में नीचे जलती अग्नि को मन्द कर देते हैं अथवा पानी का छींटा लगाते हैं या पलटे से उसे चलाते हैं जिससे अनावश्यक वाष्प बाहर निकल जाये। जब यह सारे उपाय निरर्थक हो जायें तब कढाई को चूल्हे से उतार लेते हैं, ठीक इसी प्रकार सभी धातुओं के सार भाग को सुरक्षित रखने के लिये उष्णता बढाने वाले भोजन और विचारों का त्याग, अच्छे लोगों की संगति, व्यायाम से इस ऊर्जा को शरीर में खपा देना और कुसंगति से दूर रहना ही सर्वोत्तम उपाय है। इन उपायों से ही वह पुरोजिती बन सकेगा। इस सार भाग सोम की रक्षा करने पर जो मस्ती, स्फूर्ति, आनन्द, उत्साह, निर्भयता और वैचारिक पवित्रता आती है वह वर्णनातीत है। ब्रह्म अर्थात् शुक्र की रक्षा करने पर वह विचाराग्नि का ईधन बन बुद्धि की कार्य शक्ति को बढ़ा देगा जिससे वेदादि शास्त्रों की गूढ़ बातें सरलता से बुद्धिगम्य हो सकेंगी और ब्रह्म अर्थात् ईश्वर का दर्शन भी होगा।

अन्धस् शब्द भक्ति रस का भी वाचक है। यह अर्थ लेने पर दीर्घ जीभ वाले कुत्ते का अभिप्राय लोभ या लालच की वृत्ति को हटाने से है। गीता में काम, क्रोध और लोभ को नरक की ओर ले जाने वाले बतलाया है।

मन्त्र कहता है **"अन्धसः सुताय मादयित्नवे"** जैसे सोम को कूट कर उसे दशों अंगुलियों से निचोड़ते हैं और छलनी से छानकर पात्र में सुरक्षित रखते हैं वैसे ही हे मनुष्यों! तुमने जप, तप, ध्यान, भक्ति द्वारा जिस भक्ति रस को प्राप्त किया है उसे सुरक्षित रखने पर वह तुम्हें अद्भुत मस्ती, उमंग और आह्लाद प्रदान करेगा। कहीं यह भक्ति रस इस तरह बिखर न जाये अथवा कोई प्राणी कौआ, कुत्ता आदि भ्रष्ट न कर सके इसके लिये तुम्हें सावधान हो जाना चाहिये। जो भक्ति करना चाहता है उसे विषय भोग और कुसंग से दूर रहना चाहिये क्योंकि कुसंग काम,क्रोध,मोह का जनक लक्ष्य से दूर करने वाला और बुद्धि का नाशक है। महाभारत शान्तिपूर्व 163 में कामादि त्रयोदश दोष और उनके नाश का उपाय बतलाते हुये लोभ की उत्पत्ति और उसकी निवृत्ति कैसे हो इसका वर्णन किया है–

अज्ञान प्रभवो लोभो भूतानां दृष्यते सदा। अस्थिरत्वं च भोगानां दृष्ट्वा ज्ञात्वा निवर्तते।।

अज्ञान के कारण भोगों के प्रति लोभ की वृत्ति उत्पन्न होती है इसकी निवृत्ति भोग क्षणभंगुर है, तृष्णा का कभी अन्त नहीं होगा यह जान लेने पर होती है। जब लोभ पर विजय प्राप्त कर ली जायेगी तो अन्य विषयों पर भी नियन्त्रण होगा और साधक इन्द्रियों को वश में कर इन्द्रजित् बन जायेगा।

क्रमशः

संचालक की आवश्यकता हैं।

आर्यसमाज रानीबाग गुरुकुल के लिए संचालक की शीघ्र आवश्यकता हैं। इच्छुक आर्य महानुभाव आर्य समाज रानीबाग, दिल्ली (दूरभाष - 9953851043, 9810040982) से शीघ्र सम्पर्क करें। वानप्रस्थियों को वरीयता दी जाएगी। भोजन - आवास निःशुल्क एवं वेतन योग्यतानुसार दिया जाएगा।

संचालिका की आवश्यकता हैं।

आर्य समाज सैनिक विहार, नई दिल्ली के आर्य कन्या गुरुकुल के लिए योग्य संचालिका की आवश्यकता है। इच्छुक आर्य आवेदिका आर्यसमाज सैनिक विहार, नई दिल्ली (दूरभाष - 9953851043, 9810040982) से सम्पर्क करें। वानस्थियों (महिला) को वरीयता दी जाएगी। भोजन-आवास, निशुल्क। वेतन योग्यतानुसार दिया जाएगा।

ओ३म्

भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा
के लिए उत्तम कागज़, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण
(द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)

सत्य के प्रचारार्थ

सत्यार्थ प्रकाश

सत्य के प्रचारार्थ

● प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
● विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
● स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन

कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति **सत्यार्थ प्रकाश** के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें

आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650622778
E-mail : aspt.india@gmail.com

नारी गौरव के प्रतिष्ठापक महर्षि दयानन्द सरस्वती

महिला दिवस पर विशेष

स्व. कैप्टन देवरत्न आर्य

प्राचीन काल से भारतीय संस्कृति एवं सभ्यता का सर्वाच्च स्थान दिलाने में नारी जाती का विशेष योगदान रहा है। रामायण काल की प्रसिद्ध घटना है । सीताजी जब महल की सफाई कर रही थीं तो उन्होंने परशुराम के धनुष को उठाकर एक तरफ रख दिया और सफाई के पश्चात पुनः उसी स्थान पर। राजा जनक ने जब यह देखा तो निश्चय किया कि सीता के स्वयंवर में उसी क्षत्रिय से इसका विवाह करूंगा जो इस धनुष को तोड़ देगा। स्वयंवर में रावण जैसे विद्वान और योद्धा आये पर उस धनुष को नही उठा पाए, अन्त में भगवान राम ने उसे तोड़ा और सीता का विवाह उनके साथ हुआ। इसी तरह महारानी कैकयी एक योद्धा के नाते राजा दशरथ के साथ युद्ध में रथ पर गई। युद्ध में जब रथ के पहिए की एक धुरी टूट गई तो उसने रथ के पहिए को संभाला। वह युद्ध विद्या में पारंगत थीं। उस युग में नारी जाति विद्वान भी थी और योद्धा भी। अनसुया, सुलभा,कात्यायनी, शकुन्तला, गार्गी, मैत्रयी नाम से इतिहास में अमर हुई। वे शास्त्रार्थ भी करती थीं और इस संबंध में पुरूषों से बहुत आगे थीं।

महाभारत काल में नारी को अपमानित किया गया। द्रोपदी के चीरहरण का आदेश कौरवों के राजा युधिष्टर ने दिया उस समय भरी सभा में धर्मराज युधिष्ठिर, धर्नुधारी अर्जुन, दानवीर कर्ण और भीम जैसे योद्धा उपस्थित थे और किसी ने भी इसका विरोध नहीं किया। उसके पश्चात नारी अपमानित होती रही और जनसाधारण उसे तिरस्कृत करता रहा। एक कहावत प्रचलित हो गई थी कि "नारी पैरों की जूती के समान है।" जिसे जब चाहे बदला जा सकता है। नारी इस अपमान से अपमानित होकर अनेक साधु सन्तों के द्वारा भी अपमानित होती रही।

स्वामी विवेकानन्द जी की चर्चा आज बहुत होती है परन्तु उनकी विचारधारा से अनभिज्ञ लोग नही जानते कि उन्होंने समाज सुधार का प्रयत्न नही किया। प्रमाण प्रस्तुत है – हमें बाल विवाह निराकरण,विधवा–विवाह आदि सुधारों के लिए माथापच्ची नही करनी चाहिए।

मैं यह मानता हूँ कि बालविवाह से हमारी जाति अधिक नीतिमान और पवित्र बनती है। (भारतीय नारी पृ. 34,53) मै यह भी मानता हूँ कि बालविवाह ने हिन्दू जाति को सतीत्व धर्म से विभूषित किया है" (ज्ञानयोग,पृ 30) कबीरदास, तुलसीदास व पुराणकारों ने नारी–निन्दा में कोई कमी नही रखी। ईसाई मजहब में नारी के शरीर में आत्मा का अस्तित्व ही नही माना जाता। पिता यदि पुत्री से शारिरीक संबंध बनाता है तो बाईबल में पाप नहीं माना गया। लूत नामक 'सन्त' ने मद्यपान करके अपनी दो बेटियों को गर्भवती बनाया तथा उनसे दो पुत्र उत्पन्न किए। बाईबल में इस कार्य की कहीं भी निन्दा नही मिलती। इसमें तलाक पर किसी भी प्रकार का प्रतिबंध नही है। इस्लाम में तलाक प्रथा बहुत चालू है। स्त्री गर्भवती हो, बच्चे वाली या बीमार हो, जवान हो अथवा वृद्ध हो जब भी पुरुष चाहे तब उसे परित्याग कर सकता है। एक समय में वह 4 पत्नियां रख सकता है। वहां स्त्री केवल भोग की वस्तु है। बुर्का पहनकर ही बाहर निकल सकती है। बहिश्त में जाने पर खुदा प्रत्येक मुसलमान को 500 अछुती हूरें (अप्सराएं), 4000 कुंवारी स्त्रियां, 1000 विवाहित

शेष पृष्ठ 6 पर...

महाशय धर्मपाल(एम.डी.एच)आर्य वेदव्यास वानप्रस्थाश्रम का उद्घाटन सम्पन्न

उद्घाटन के शुभ अवसर पर उपस्थित आर्यजन गुरुकुल आश्रम का क्रियाकलापों की जानकारी देते डॉ. ब्रह्ममुनि तथा मंच पर उपस्थित आर्यजन

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की
वेद प्रचार वाहन के माध्यम से
भजनोपदेशकों टोलियों को आमंत्रित कर लाभ उठाएँ

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का विगत वर्षो से वेद प्रचार वाहन के माध्यम से वैदिक प्रचार–प्रसार का कार्य तीव्रगति से चल रहा है।

यह वेद प्रचार वाहन प्रतिदिन दोपहर को विद्यालयों के सामने खड़ा होता हैं जहाँ बच्चे–छोटी –छोटी पुस्तकें खरीदते हैं। तथा सांयकाल विभिन्न गावों में सार्वजनिक स्थानों पर खड़े होकर प्रचार कार्य होता है। ज्ञातव्य है सभा द्वारा इस समय जिन प्रमुख विद्वान भजनोपदेशकों को आप अपने–अपने आर्य समाज के वार्षिकोत्सव तथा वेद प्रचार समारोह आदि में वेद प्रचार हेतु सभा के भजनोपदेशकों से सम्पर्क करें । दूरभाष :– पं. सन्दीप आर्य (मो. 9650183332) एवं पं. कुलदीप आर्य (मो.9540040343) पर सम्पर्क करे।

–विनय आर्य, महामन्त्री

विलक्षण महर्षि दयानन्द सरस्वती जी

जन्म दिवस पर विशेष

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ऐसे ऐतिहासिक महापुरुष हैं जो अपने आप में अनुपम एवं विलक्षण है। वे ईश्वर भक्त–,योगाभ्यासी,वीतराग संन्यासी, तपस्वी, त्यागी,ब्रह्मचारी, वित्तेषणा–पुत्रेषणा –लोकेषणा रहित, सत्यान्वेषी, शास्त्रार्थ समर के अजेय योद्धा, राष्ट्र–भक्त, वैदिक संस्कृति के पोषक तथा व्याकरण के अद्वितीय विद्वान थे। बड़े से बड़ा प्रलोभन भी उन्हें अपने आदर्शों से विमुख नहीं कर सका। उनके सामने किंचित–मात्र भी अपना किसी प्रकार का स्वार्थ नहीं था बल्कि उन्होंने अपना सर्वस्व मानव–मात्र की सेवा में समर्पित कर रखा था। रात–दिन बस एक ही चिन्ता थी कि आर्यावर्त्त की ज्ञान–गरिमा को पुनः प्रचारित व प्रसारित करके समृद्ध कैसे करें ताकि हमारा वही प्राचीनतम् खोया हुआ गौरव हमें प्राप्त हो सके। उनका मानना था कि महाभारत के भयंकर युद्ध के समय से ही इस विश्व–गुरु आर्यावर्त्त का पतन आरंभ हुआ और तत्व–वेत्ता, आत्मा वेत्ता एवं वेद–वेत्ता ऋषियों के अभाव में यह पतन निरन्तर और अधिक आत्मघाती होता चला गया। जो भी तथाकथित समाज सुधारक कार्यक्षेत्र में निकला वहीं किसी न किसी अपनी एषणा का शिकार हो कर इस महान् भारत को रसातल की ओर ही ले जाता रहा। किसी में भी इतना साहस नहीं था कि एषणारहित होकर एक ईश्वर, एक धर्म तथा मानव–मात्र के उत्थान के लिए एक जीवन–पद्धति की उद्घोषणा कर सके। इस प्रकार ये दिशाहीन तथाकथित समाज–सुधारक, गुरु पैगम्बर एवं मसीहा मानवता को और भी अधिक खण्डित करने का ही पाप करते रहे।

वर्तमान में स्थिति और भी अधिक विकट से विकटतर होती जा रही है। दिन–प्रतिदिन नए से नया कोई व्यक्ति उठ खड़ा होता है और अपने लिए एक नई ही जमात अलग से पैदा कर लेता है। अलग–अलग मनुष्य–कृत ग्रन्थों को मान्यता मिल रही है, अलग–अलग गुरु–मन्त्र दिए जा रहे हैं, अलग–अलग पूजा–पद्धतियां प्रचलित हो रही है, परमात्मा की उपासना के स्थान पर व्यक्तियों की पूजा–अर्चना हो रही है... उन्हीं की आरतियां उतारी जा रही है..... उन्हीं की बड़ाई में भजन गाए जा रहे है... धर्म एक पाखण्ड बन गया है..... योग एक व्यवसाय बन गया है..... कितना बड़ा अपराध हो रहा है.... बड़े–बूढ़े सब दिशाहीन हो

शेष पृष्ठ 6 पर.....

ओ३म्

दिल्ली की समस्त आर्यसमाजों की ओर से

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

के तत्त्वावधान में

रविवार 24 मार्च, 2013

सायं 3-30 से 7-15 बजे

आर्य परिवार होली मंगल मिलन

स्थान : रघुमल आर्य कन्या सीनियर सैकेण्डरी स्कूल,

राजाबाजार, कनॉट प्लेस (स्टेट्स एम्पोरियम के पीछे), शिवाजी स्टेडियम के पास, नई दिल्ली-1

नवसस्येष्टि यज्ञ : 3-30 बजे | विशिष्ट संगीत एवं हास्य रंग की प्रस्तुति | बच्चों के सांस्कृतिक कार्यक्रम

पुष्पों द्वारा होली-मंगल मिलन एवं प्रीतिभोज : 7-15 बजे

इस अवसर पर आपसे निवेदन है कि :-

१) इस आर्य परिवारों के मिलन पर्व पर आप अपने परिवार के छोटे से छोटे सदस्य एवं बुजुर्गों सहित सम्मिलित होकर एक वृहद् परिवार का रूप देवें।

२) यदि आप किन्हीं ऐसे आर्य परिवारों के विषय में जानते हो जो किन्हीं कारणों से वर्तमान में आर्यसमाज के संगठन से सक्रिय सम्बंध न रख पाए हों तो कृपया इस कार्यक्रम का उन्हें निमन्त्रण अवश्य दें अथवा उनका नाम-पता सभा को सूचित करें जिससे सभा उनको इस समारोह में भाग लेने के लिए आमन्त्रित कर सके। आप उनके नाम एवं पते दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के ई-मेल aryasabha@yahoo.com पर भी भेज सकते हैं।

सभी आर्यजन दिन एवं समय नोट कर लें तथा सपरिवार एवं इष्ट मित्रों सहित हजारों की संख्या में पहुंचकर समारोह को सफल बनाएं।

समारोह स्थल पर उपलब्ध सेवाऐं

1. आर्य परिवारों के विवाह योग्य युवक-युवतियों का पंजीकरण 2. मोबाइल में आर्यसमाज की धुनों तथा वॉलपेपर निःशुल्क डाउनलोड की सुविधा 3. आर्य सन्देश की आजीवन सदस्यता में छूट 4. साहित्य विक्रय केन्द्र

पृष्ठ 5 का शेष विलक्षण महर्षि दयान्नद सरस्वती...

रहे है.... भावी पीढ़ी किंकर्त्तव्य विमूढ़ हो रही है.... राष्ट्र टूट की कगार पर है.... सामाजिक समरसता छिन्न–भिन्न हो रही है..... अनाचार है, दुराचार है, भ्रष्टाचार है, द्वैष है घृणा है, जातिवाद है, मत–मजहब वाद है.... चारों ओर आंतकवाद का वातावरण है.... यह सब हो रहा है अपने–अपने स्वार्थी के कारण। बीच में से यदि अपना–अपना स्वार्थ हट जाए तो आज भी एक आदि वैदिक धर्म की स्थापना हो सकती है, एक ईश्वर की ही उपासना हो सकती है, सबका एक ही गुरु–मन्त्र हो सकता है, सामाजिक समरसता स्थापित हो सकती है और अपना यह देश पुनः विश्वगुरु बन सकता है। विश्व–बन्धुत्व का सपना साकार हो सकता है।

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी अपने आप में कितने अनुमप एवं विलक्षण व्यक्तित्व के मालिक थे कि उन्होंने कहीं भी, कभी भी अलग मत चलाने की कल्पना तक हीं नहीं की। अपनी स्तुति, अपनी पूजा तथा अपना अलग से वर्चस्व स्थापित करना तो दूर रहा इस प्रकार की सोच भी उनके लिए न्यायकारी परमात्मा की दृष्टि में महान्, अपराध था। उनके लिए तो ईश्वरीय ज्ञान 'वेद' ही सर्वोपरि रहा। महाभारत काल से पूर्व जितने भी ऋषि–महर्षि हुए, तत्व–वेत्ता हुए, आचार्य हुए, महापुरूष हुए किसी ने भी अपना अलग मत या सम्प्रदाय चलाने का अपराध नहीं किया। ब्रह्मा,शिव, विष्णुमुनि,वशिष्ठ,विश्वामित्र,लोमेश, याज्ञवल्क्य ,गौतम ,कणाद ,कपिल ,पंतजलि, जैमिनी,व्यास, मर्यादा पुरूषोतम श्रीराम, योगेश्वर श्रीकृष्ण आदि अनेक दिव्य विभूतियों के लिए ईश्वरीय ज्ञान वेद ही सर्वोपरि था। आज व्यक्ति का इतना अधिक अधःपतन हो गया है कि अज्ञानी, अनपढ़,कुपढ,व्याकरण और वेद विहीन व्यक्ति भी लोगों को धर्म,कर्म ,उपासना, नाम व मन्त्र का उपदेश देकर दिग्भ्रमित करने का महापाप कर रहे है। व्यक्ति द्वारा किए गए बुरे कर्मो से छुटकारा दिलवाकर भवसागर पार कराने का गारण्टी दे रहे हैं तथा मूर्ख लोग उनके झांसे में आकर अपना लोक–परलोक बिगाड़ रहे हैं। अविद्या एवं अज्ञानता से भरपूर नई–नई अप्रमाणिक पुस्तकें लिखकर उन्हें सर्वमान्य घोषित करने का अधम कार्य कर रहे हैं। थोड़ी भी लज्जा नहीं, परमात्मा का भय नहीं..... थोड़ी विचार करें कि क्या ये तथाकथित स्वयं को गुरू–ज्ञानी घोषित करने वाले लाल–बुझक्कड़ उन प्राचीन ऋषियों–महर्षियों,आप्तमहापुरुषों,आचार्यो एवं तत्व–वेत्ताओं से भी बड़े हो सकते है..?

इसे परमपिता परमात्मा की अपार कृपा और भारतवर्ष का सौभाग्य ही कहा जायेगा कि आधुनिक युग में उपरोक्त ऋषियों–महर्षियों की ही परम्परा में दण्डी स्वामी विरजानन्द जी के विलक्षण शिष्य महर्षि दयानन्द सरस्वती जी जैसे मनीषी का प्रादुर्भाव हुआ जिनके लिए वेद ही सर्वोपरि था। जिनके लिए उपरोक्त ऋषि–महर्षि, आचार्य एवं आत्म–वेत्ता ही अनुकरणीय थे। उन्होंने वेद को अपौरूषेय अर्थात चार ऋषियों के माध्यम से स्वयं परमात्मा द्वारा दिया गया ज्ञान घोषित किया तथा वेदों के अतिरिक्त शेष समूचे संस्कृत वाड्मय को दो भागों में विभक्त करते हुए आर्ष और अनार्ष दो संज्ञाएं दी। वेदानुकूल उपरोक्त ऋषियों–महर्षियों द्वारा प्रणीत ग्रन्थों को उन्होंने आर्ष तथा महाभारत काल के बाद की सामान्य मनुष्यों द्वारा लिखी पुस्तकों को अनार्ष घोषित किया। उन्होने केवल आर्ष ग्रन्थों को ही प्रमाण माना तथा समस्त अनार्ष ग्रन्थों को अप्रमाणित श्रेणी में रखने का पुण्य किया। उन्होनें केवल आर्ष ग्रन्थों को ही प्रमाण माना तथा समस्त अनार्ष ग्रन्थों को अप्रमाणित श्रेणी में रखने का पुण्य किया। उन्होने एवं अनार्ष ग्रन्थों में भेद करने के लिए कुछ सूत्र भी प्रस्तुत किए। आर्ष ग्रन्थों के आरंभ में प्रायः अथ अथवा ओ३म् शब्द मिलता है जबकि अनार्ष पुस्तकों को दुर्गाये नमः सरस्वतयै नमः, नारायणाय नमः तथा श्रीगुरूचरणारविन्दाभ्यां नमः आदि शब्दों से आरंभ किया जाता है। समस्त आर्ष ग्रन्थ सार्वभौमिक सत्य का प्रतिपादन करते हैं और शंसयानाशक एवं लोकोपकारक है परन्तु अनार्ष ग्रन्थ भ्रमोत्पादक तथा सांप्रदायिक संकीर्णता द्वैष,घृणा, एवं प्रमाद से भरे हुए है। इनमें परस्पर गहरा मतभेद है तथा जन–साधारण में भी भेदक बुद्धि पैदा करते है। आर्ष ग्रन्थों की टीकाएं सर्वमान्य एवं आप्त मनीषियों द्वारा लिखी गई हैं और अनार्ष गन्थों की टीकाएं सामान्य सांसारिक व्यक्तियों ने लिखी है। यह तो आर्ष अनार्ष ग्रन्थों के सम्बन्ध में दिशा–निर्देश है मगर आज तो तथाकथित गुरूओं,सन्तों,पीरों और पैगम्बरों द्वारा इससे भी निम्नस्तर की पुस्तकें लिखी जा रही है और उन्हें ही अपनी–अपनी जमात में सर्वमान्य घोषित करके बाबा–वाक्यं प्रमाणम् की कुरीति एवं कुनीति सिर चढ़कर बोल रही है... अन्धों के द्वारा अन्धों को मार्ग दिखाने वाली बात चरितार्थ हो रही है इसलिए आदि ऋषि–महर्षियों की परम्पराओं के पोषक महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के चिन्तन को आज आत्मसात् कराने की नितान्त आवश्यकता है।

पृष्ठ 4 का शेष नारी गौरव के प्रतिष्ठापक महर्षि.....

स्त्रियां तथा अनगिनत जिसमें (लडके) भोगने हेतु देगा। (श्री इन्द्रजीत देव आर्य के लेख " नारी विकास की दिशां से साभार)

उस समय समाज में स्त्रियों को शूद्र मानकर उसके पढने लिखने के द्वार बंद थे। नारी जब इस अपमान को सहन करती हुई संभवतः अपनी जीवनलीला समाप्त करने जा रही थी तो एक मंदिर से आवाज आई " यत्र नार्यन्तु पूज्यन्ते रमन्तू तत्र देवता।" नारी रूक गई और उस मन्दिर के अन्दर गई वहां पर महर्षि दयानन्द सरस्वती का उपदेश हो रहा था। वे बोल रहे थे। जहां नारी को पूजा होती है वहां देवता निवास करते है, उन्होंने शास्त्रों का वर्णन करते हुए कहा किसी भी प्रकार का प्रतिबंध नही है। इस्लाम में तलाक प्रथा बहुत चालू है स्त्री गर्भवती हो, बच्चे वाली या बीमार हो, जवान हो अथवा वृद्ध हो जब भी पुरुष चाहे तब उसे परित्याग सकता है। एक समय में वह 4 पत्नियां रख सकता है। वहां स्त्री केवल भोग की वस्तु है। बुर्का पहनकर ही बाहर निकल सकती है। बहिश्त में जाने पर खुदा प्रत्येक मुसलमान को 500 अछुती हूरें (अप्सराएं), 4000 कुंवारी स्त्रियां, 1000 विवाहित स्त्रियां तथा अनगिणत जिलमें (लौंडे) भोगने हेतु देगा। (श्री इन्द्रजीत देव आर्य के लेख " नारी विकास की दिशां से साभार)

उस समय समाज में स्त्रियों को शुद्र मानकर उसके पढने लिखने के द्वार वन्द थे। नारी जब इस अपमान को सहन करती हुई संभवतः अपनी जीवनलीला समाप्त करने जा रही थी तो एक मंदिर से आवाज आई " यत्र नार्यन्तु पूज्यन्ते रमन्तू तत्र देवता।" नारी रूक गई और उस मन्दिर के अन्दर गई वहां पर महर्षि दयानन्द सरस्वती का उपदेश हो रहा था। वे बोल रहे थे। यदि पुरुष विधुर होकर दूसरा विवाह कर सकता है तो नारी को भी विधवा होकर दूसरा विवाह करने का समान अधिकार है। दयानन्द ने तो यहां तक कहां कि विधुर को विधवा से ही विवाह करना चाहिए। जब आर्य समाज का प्रचार यौवन अवस्था में था। मुझे स्मरण है कि एक सम्पन्न परिवार ने मेरे पूज्य पिताश्री आचार्य भद्रसेन जी को विवाह संस्कार कराने के लिए आंमत्रित किया था। विवाह मंडप पर पहुंचने के पश्चात उन्हें ज्ञात हुआ कि वर विधुर है एवं वधु कुंवारी। उन्होंने यह कहकर मंडप पर ही विवाह कराने से मना कर दिया कि ऐसा विवाह दयानन्द के आदेश के विरूद्ध है। स्वामी दयानन्द की प्रेरणा पाकर अनेक नवयुवकों ने विशेषकर प्रान्त में यह प्रतिज्ञा की कि हम अपना विवाह बाल विधवाओं के साथ करेंगे और ऐसे सैकडो विवाह भारत में हुए। प्रसिद्ध आर्य नेता श्री गजानन्द जी आर्य के बाल–विधवा विवाह से सम्प्रेरित होकर विवाह संस्कार के समय कुछ आर्यो ने प्रतिज्ञा की कि हम अपने पुत्रों के विवाह भी बाल विधवाओं के साथ करेंगे, ऐसे 9 आर्य पुरुष थे और सभी ने अपने जीवन में की गई प्रतिज्ञा का पालन किया।

अपने पुनः प्रवचन के 12 वें प्रवचन में दयानन्द ने उपदेश दिया कि " ईश्वर के समीप स्त्री पुरूष बराबर है यह न्यायकारी है और उसमें पक्षपात का लेश मात्र भी नही है। जब पुरूषों को पुनः विवाह की आज्ञा दी जाऐ तो नारियों को भी दूसरे विवाह से क्यों रोका जाए (उपदेश मंजरी)। सन् 1887 में सहारनपुर में भाषण देते हुए कहा कि विधवा का पुनः विवाह होना चाहिए और पुरूष को एक स्त्री के जीवित रहते दूसरा विवाह नही करना चाहिए। यह स्वामी दयानन्द की देन थी जिससे विधवाओं की दशा में कुछ सुधार हुआ।

दयानन्द के विचारों से प्रभावित होकर फ्रैंच विद्वान रोमां रौलां ने लिखा :–

"Dayanand was no less generous and bold in his crusade to improve the condition of women, a deplorable in india. He revolted against the abuses from which they suffered"

इसी युग में स्वामी दयानन्द के समाज सुधार कार्यो से प्रभावित होकर श्रीमती सरोजनी नायडू ने लिखाः –

" महर्षि दयानन्द उस दर्पण के समान हैं जिसमें लोग प्रत्येक प्रकार रंग देखते है, कोई उन्हें ऋषि या धार्मिक नेता कहे पर वे सब गुणों के समूह है। मैं उन्हें वैद्धिक,सामाजिक,राष्ट्रीय एवं इन प्रकार की दासता से मुक्तिदाता मानती हूँ।"

महर्षि दयानन्द ने नारी जाति पर असंख्य उपकार किये। यह कहना अति संयोजित स्वामी दयानन्द ने कहा" मातृमान,पितृमान,आचार्यवान,पुरूषो वेदाः इसका यही अर्थ है कि जो संस्कार माता अपने बच्चों को दे सकती है। विश्व का कोई भी विद्यालय नही दे सकता। मैं एक परिवार को जानता हूँ। उनके पुत्र मेरे सहपाठी थे। एक दिन जब मैं उनके घर गया तो उनकी माताजी बडी निराश और मानसिक असंतुलन में थी। मैंने उनसे पूछा माताजी क्या बात है। तब उन्होने कहा मैं अपने बच्चों का निर्माण नही कर पाई। जबकि शास्त्र मानते है कि माता निर्माता होती है। जब मैं परिवार का निर्माण नही कर सकी तो समाज और राष्ट्र का निर्माण करने का अधिकार मुझको नही है। मैं सोचने लगा, जिस नारी को हिन्दु जाति अपमानित करती रही उस नारी को इस तरह का चिंतन करने का अधिकार महर्षि दयानन्द ने दिया। जब स्वामी दयानन्द कर्त्तव्य क्षेत्र में आए उस समय स्त्रियों की बडी दुर्दशा थी। स्त्रियों को शिक्षा प्राप्त करने का अधिकार नही था। बालविवाह हो रहे थे, विधवा विवाह पर निषेध था और सती प्रथा एवं पर्दा प्रथा का बोलबाला था। स्वामी दयानन्द ने इन सब कुरितियों का विरोध किया और बताया कि वैदिक संस्कृति में नारी का स्थान बहुत ऊँचा है और कहा "भार्या श्रेष्ठतः सखा" नारी पूरे घर की सेवा करती है कष्टों को दूर करती है और गृह स्वामिनी है। स्वामीजी ने पुरूषों द्वारा किये जाने वाले बहुविवाह का विरोध किया और एक पत्निव्रत धर्म के पालन पर जोर दिया।

क्रमशः

आगामी कार्यक्रम — योग-ध्यान,साधना शिविर

आनन्दधाम (गढ़ी आश्रम) उधमपुर,जम्मू में पूज्य महात्मा चैतन्यमुनि जी के सान्निध्य में दिनांक 7 से 14 अप्रैल 2013 तक निःशुल्क योग–ध्यान,साधना शिविर का आयेाजन किया जायेगा। जिसमें अनुभवी आचार्यो एवं महात्माओं द्वारा उपासना,प्राणायाम ,योगासन आदि कराए जाऐंगे। तथा दर्शन, पठन–पाठन की भी व्यवस्था है। साधक अपनी शंकाओं का समाधान भी कर सकेंगे। इस अवसर पर सामवेद पारायण–यज्ञ का आयोजन भी किया गया। इच्छुक साधक विस्तुत जानकारी व स्थान आरक्षित करने के लिए फोन नं. 09419107788 पर सम्पर्क करें। *– भारतभूषण आनन्द, प्रधान*

निःशुल्क ध्यान योग शिविर एवं वृहद यज्ञ

तिथि: सोमवार 18 मार्च से रविवार 24 मार्च 2013 तक
स्थान: योग साधना केन्द्र, आत्म–शुद्धि आश्रम, बहादुरगढ़
यज्ञ ब्रह्मा : पूज्य स्वामी धर्ममुनि जी दुग्धाहारी
भजनोपदेशक: पं. रमेशचन्द्र जी कौशिक (झज्जर)

गुरुकुल वैदिक आश्रम, वेदव्यास का 53 वाँ वार्षिकोत्सव

तिथि: 8 मार्च से 10 मार्च 2013 तक
स्थान: गुरुकुल वैदिक आश्रम, वेदव्यास, राउरकेला, जिला– सुन्दरगड़ (ओड़िशा)
निवेदक : आचार्य डॉ.देवव्रत – मुख्याधिष्ठाता (ट्रस्टि)

आर्य समाज सागरपुर का वार्षिकोत्सव

तिथि: 19 अप्रैल से 21 अप्रैल 2013 तक
स्थान: आर्य समाज सागरपुर, नई दिल्ली – 110046
निवेदक : जयसिंह वर्मा, मन्त्री आर्यसमाज सागरपुर

आर्य वर की आवश्यकता

आर्य विचारों से ओत प्रोत जन्म मई, 1983/ 5'5''/एम.ए. अर्थशास्त्र, एम.एड. नेट पास, उच्चस्तरीय कम्प्यूटर एवं फैशन डिजाईनिंग डिप्लोमा युक्त, वर्तमान में पी.जी.टी. के रूप में कार्यरत एवं पी.एच.डी. कर रही, गौरवर्णीय,स्लिम कन्या हेतु समकक्ष योग्यता युक्त, स्वावलम्बी, पूर्णतय: निर्व्यसनी एवं शाकाहारी आर्य वर की आवश्यकता है। सम्पर्क सूत्र :– 09425488861 ,09806684799ई–मेल–lssrana@ rediffmail.com

शोक समाचार — महाशय अभय राम आर्य का निधन

आर्य समाज नजफगढ़ के सरंक्षक महाशय अभय राम आर्य का निधन 28 जनवरी 2013 को 88 वर्ष की आयु में हो गया। उनका अन्तिम संस्कार वैदिक मन्त्रोचार के साथ किया गया। वे अपने पीछे भरा पूरा परिवार छोड़ गये हैं। उन्होंने अपने जीवन में आर्यसमाज की बहुत सेवा की काफी वर्षो तक वे आर्यसमाज के मन्त्री रहे। वे नजफगढ़ के गणमान्य व्यक्तियों में से एक थे। आर्यसमाज नजफगढ व क्षेत्र के लोगों ने उन्हें श्रद्धांजली दी।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वे दिवंगत आत्माओं को सद्गति एवं शोक-संतप्त परिजनों को इस दारुण दु:ख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करें। -सम्पादक

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के जन्मोत्सव एवं ऋषि बोध उत्सव के शुभ अवसर पर विशेष छूट

अन्तरराष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन

~~150 रुपये~~ सी डी 5 सी डी का सेट

मात्र100 रुपये

(डाक व्यय अलग देय होगा)

25, 26, 27, 28+कवि सम्मेलन आर्य वीर दल व्यायाम प्रदर्शन एवं लेजर शो पैसा भेजने पर ही सीडी भेजी जा सकेगी अथवा कार्यालय से प्राप्त की जा सकती है।

सम्पर्क करें :– विजय आर्य, (9540040339)

वैदिक प्रकाशन विभाग, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा,
15-हनुमान रोड, नई दिल्ली फोन: 011-23360150,23365959

कार्यक्रम सम्पन्न — आर्य समाज सीतापुर का वार्षिकोत्सव

आर्य समाज सीतापुर के 125 वें स्थापना दिवस के अवसर पर 108 वें वार्षिकोत्सव दिनाक 15,16,व 17 फरवरी 2013 सम्पन्न हुआ। तीनो दिन चल रहे इस कार्यक्रम का प्रारम्भ यज्ञ से हुआ। यज्ञ के ब्रह्मा थे स्वामी यज्ञमुनि। तीन दिनो तक लगातार प्रात: 8 बजे से रात्रि 11 बजे तक चलने वाले इस आयोजन में स्वामी यज्ञ मुनि,वीरांगना पुष्पा शास्त्री, पं. शिव कुमार शास्त्री, भजनोदेशक घनश्याम प्रेमी ने ईश्वर, अन्धविश्वास निवारण, वृद्धाश्रम के स्थान पर पितृ यज्ञ आदि विषयों पर अपने ओजस्वी प्रवचन व भजन प्रस्तुत किये।

इस शुभ अवसर पर प्रमुख रुप से आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के प्रधान श्री देवेन्द्र पाल वर्मा जी तथा क्षेत्र के आर्यमहानुभव उपस्थित थे।

– चौधरी रणवीर सिंह, प्रधान

केन्द्रीय कारागार गृह अजमेर में हुए वैदिक प्रवचन

23 एवं 24 फरवरी को वैदिक आध्यात्मिक न्यास के गोष्ठी में सम्मिलित होने आये आचार्य श्री आनंद पुरुषार्थी जी ने उसके अगले दिन 25 फरवरी को केन्द्रीय कारागार गृह के बंदी भाईयों को मार्गदर्शन दिया जहाँ लगभग 400 बंदी, जेल के अनेक सुरक्षाधिकारी, श्री बलेश्वर मुनि जी व ऋषि उद्यान के अनेक महानुभाव उपस्थित थे। जेल रहे हुए रामप्रसाद बिस्मिल,सुभाष चन्द्र बोस, लोकमान्य तिलक, गाँधी जी आदि अनेक महापुरुषों का उदाहरण देकर अपनी बात को पुष्ट किया। कई योनियों में भटकने के बाद हमें मानव जीवन प्राप्त हुआ है। आगे का जीवन अभी भी सुधारा जा सकता है। आचार्य जी ने भी वैदिक साहित्य भी परोपकारिणी सभा की ओर से जेल अधीक्षक श्री शंकरलाल ओझा जी को पुस्तकालय हेतु भेंट किया। अनेक कैदियों ने दुर्गुणों को छोड़ने का संकल्प लिया।

15वाँ वैदिक राष्ट्र कथा शिविर सम्पन्न

30 दिसम्बर 2012 से 06 जनवरी 2013 तक प्रांशला में चौदह हजार बच्चों के संस्कार शिविर का भव्य आयोजन किया गया जिसमें बच्चों के शारीरिक एवं बौद्धिक विकास व राष्ट्र के प्रति जिम्मेदार बनाने हेतु देश के विभिन्न क्षेत्रों से आये हुए विद्वानों, शिक्षाविदों, सेनानायकों, राजनीतिज्ञों द्वारा नाना विषयों पर जीवनोपयोगी विषयों पर अपने–अपने वकत्व्य दिये। इस शिविर में थल सेना,वायु सेना, सीमा सुरक्षा बल, आ.ई.ए.एफ. आदि रक्षा बलों के एक हजार जवानों एवं अधिकारियों ने अलग–अलग गुर एवं कर्तव्य सिखायें, उन्होनें अपने–अपने क्षेत्र के रक्षा उपकरणों को दिखाते हुए उनके संचालन के कौशल को प्रदर्शित किया। प्रतिदिन चलने वाले इस कार्यक्रम के दौरान पूर्ण अनुशासन का अद्भुत दृश्य सराहनीय एवं अनुकरणीय रहा, इस अनूठे कार्यक्रम में अनेक वैदिक मनीषियों के उद्बोधन हुए तथा पं.भानु प्रकाश शास्त्री (बरेली, उ.प्र.) के मनोहारी राष्ट्रभक्ति एवं ऋषि महिमा के भजन होते रहे।

शिविर में महामहिम राज्यपाल सर्वश्री कमला जी (गुजरात), बी.एल. जोशी (उत्तर प्रदेश), भूपेन्द्र सिंह हुड्डा (मुख्यमंत्री , हरियाणा), वी.पी.मलिक (पूर्व थल जनरल सेनाध्यक्ष), जनरल वी.के. सिंह, लेफ्टिनेंट जनरल पी.सी.कटोच, श्री जी.डी.बक्शी, निर्भय शर्मा, श्री जी. एस.ओवान, कामाडोर उदय भास्कर, पूर्व सचिव विदेश नीति जी.पार्थ सारथी, चुनाव आयुक्त एच.एस.ब्रह्मा, मुख्य सूचना आयुक्त सत्यानंद मिश्रा, यू.पी.एस.सी. मेम्बर प्रशांत मिश्रा, मानवीर सिंह एवं एम्स के डायरेक्टर आर.सी.डेका आदि अनेक महान हस्तियों ने भाग लिया।

नेट पर पढ़े-पढ़ाएँ और डाउनलोड करें : वेद, योग तथा अन्य वैदिक साहित्य

वेद, योग, पादानुक्रमकोश (संस्कृत में पहली बार) अन्य वैदिक साहित्य को देख एवं डाइनलोड करने के लिए www.ved-yog.com पर जाएँ। सम्पूर्ण आर्ष साहित्य इस बेवसाइट पर देने का प्रयास जारी है। और अधिक जानकारी के लिए श्री सतीश आर्य की चलभाष संख्या 9810815845 से सम्पर्क किया जा सकता है।

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन-2012 के कूपनों पर एकत्र की गई राशि शीघ्र भेजें

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन के विशाल कार्य पर बहुत अधिक व्यय हुआ है। सभी दान दाताओं एवं दान एकत्र करने वालों से निवेदन है कि वे अपनी राशि तथा कूपनों पर एकत्र की गई राशियाँ कूपन सहित शीघ्रताशीघ्र सभा कार्यालय में भेजें। जो सज्जन महासम्मेलन में अपनी आहुति अभी तक न दे पाए हों उनसे भी निवेदन है कि वे भी अपनी आहुति अवश्य ही भेजें, ताकि महासम्मेलन के कार्यों के बिल भुगतानों में किसी भी प्रकार की असुविधा न हो। *– ब्र0 राजसिंह आर्य, संयोजक*

साप्ताहिक आर्य सन्देश

04 मार्च, 2013 से 10 मार्च, 2013

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15–हनुमान् रोड, नई दिल्ली–110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)–11/6071/2012–13–14

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 07 / 08 मार्च –2013

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं0 यू0(सी0) 139/2012–14

आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 06 मार्च, 2013

आर्यजनों के लिए खुशखबरी-साहित्य पढ़ें सीडी से

महर्षि दयानन्दकृत सम्पूर्ण साहित्य एवं सत्यार्थ प्रकाश (18 भाषाओं में)

सीडी में उपलब्ध मूल्य मात्र 30/-रु.

प्रतिष्ठा में,

श्री.....

दैनिक याज्ञिकों/आर्यसमाजों के लिए खुशखबरी

MDH

हवन सामग्री

मात्र 70/– किलो (5,10,20 किलो की पैकिंग)

प्राप्ति स्थान :

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा,

15 हनुमान रोड, नई दिल्ली - 110001

नेमस्लिप्स

विद्यालयों में पढ़ने वाले बच्चों को महर्षि दयानन्द जी के बारे में जानकारी देने तथा उन्हें आर्यसमाज की ओर आकर्षित करने की छोटी सी शुरुआत : कापी–किताबों पर चिपकाने के लिए नेमस्लिप्स। 21 स्लिप्स का एक सैट मात्र 10/– रुपये प्रति शीट।

शगुन लिफाफे

महर्षि दयानन्द के चित्र एवं वेदमन्त्रों सहित छह सुन्दर डिजाइनों में

सिक्के वाले	बिना सिक्के
मात्र 400/-रु. सैकड़ा	मात्र 300/-रु. सैकड़ा

ब्रेल लिपि में महर्षि दयानन्द जीवनी

मात्र 1000/-रु.

आर्यजन अपनी आर्य समाज की ओर से अंध विद्यालयों को भेंट दें।

प्राप्ति हेतु संपर्क करें।

-: प्राप्त स्थान : -

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

15 हनुमान रोड,नई दिल्ली

सम्पादक, मुद्रक एवं प्रकाशक ब्र0 राजसिंह आर्य ने दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए सार्वदेशिक प्रेस, 1488 पटौदी हाऊस, दरियागंज, नई दिल्ली–2 से छपवाकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15–हनुमान रोड, नई दिल्ली–1; फोन : 23360150; टैलीफैक्स 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com से प्रकाशित किया।

सम्पादक : ब्र0 राजसिंह आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : सुशील महाजन सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ0 ओमप्रकाश भटनागर